

तनगनस्वरूपसदा। दोन्हात झूला कर है। निर्विकार बालक वत ठाडे। नाशाहृष्टि
लगा कर है। कांचन ०२॥ पीछिक मंडल शास्त्र परिग्रह। तिलतुष उर नल्या कर है
बाहिज मलिन दिसे उर उज्जल। विषय कषाय घटा कर है। कांचन ०३॥ पंचमहावत
पंचसमितिसौ। तिन गुपति रिच्छा कर है। रत्नत्रय दशा विधि धर मधुरै। बार नावना
ध्या कर है। कांचन ०४॥ बाविस परिषह सहै निरंतर। द्वादश विधत पस्या कर है। ०
रासहस्र भेद मिल पालै। आत मध्यान सदा कर है। कांचन ०५॥ त्रिषमरित्तर वित
सर सुकै। द्वयसम अचल दहा कर है। ताके शृंग शिला पर जोगी। पद जुग धर धिर
कर है। कांचन ०६॥ वरषा काल नयान कर यणी। मुसल धार वरषा कर है। ऐसे
समै तरुनीचे। छिन छिन विंदु सहा कर है। कांचन ०७॥ सीत पडे जल जमि जाय ज
वन तरु भसम हुवा कर है। ताल नदी दरिया वन के तट। काष्ट समान रहा कर है। कांच
न ०८॥ श्रावक धर निचुंचन देखै। जाय उडंड रहा कर है। दोष छियाली सतारी मु
रा। अमराहार गहा कर है। कांचन ०९॥ अठवी समुल गुण उत्तर गुण। लष चवत्या
निभा कर है। कहत हिराचंद वेक ब मिलसी। पूरण भोग मनसा कर है। कांचन ०१०॥ इति

ध॥ बुभावच॥ कवहमसे भावहि सोल भावना तिर्थे कर पदकारी रो कवहम॥ टेक॥
दर्शन विश्रुद्धि प्रथमश्रु मध्यांते॥ दोषपची सनिवारी रो देवधरमगुरु शास्त्रतपनको
विनय कं अतिभारी रो कव॥१॥ शील अनेका ने दसहितसद॥ पालुस कलमल
टारी रो॥ ज्ञानपटुर्जेनकुपटाक॥ काल अकाल संभारी रो कव॥२॥ चित्तं उदितवैराग्य
सदानरा॥ भवभोगतनु असारी रो पात्रचतुर्विधि देवी अनुपम॥ दान कं नितच्यारी
रो कव॥३॥ द्वादशविधतपसे उ निरंतर॥ यथाशक्ति अनुसारी रो साधु संबंधी उपस
रा आयोदुर कं ततकारी रो कव॥४॥ दशविध वैय्याहत्प कं नित रोग असाध्य निह
री रो॥ नक्ति कं अरं हत देवकी॥ उरस कलपरिहारी रो कव॥५॥ आचारज वहु श्रुतशा
स्त्रनकी॥ भगतिकरु न्यारी न्यारी रो॥ ब्रह्म अवश्य कं क्रिया त्रिकालही॥ कं प्रमाद विहा
री रो कव॥६॥ जिन शासनकरु मार्गे प्र भावन॥ पुजाम हो छव आरी रो॥ साधभि वात्शाल्य
करुमहा स्नेह अकृति मधारी रो कव॥७॥ ये हविधि प्रभु कव उदय आयगी॥ वं ब्यापुर
सिंह मारी रो॥ कहत हिराचंद जाते हो है॥ छिया लिस गुण धारी रो कव॥८॥ इति॥ सुभा
वच॥ नर भव पाकर धरमन की ना॥ सो भवनि फल गुमायारे॥ नर भव॥ टेक॥ ज्यौं सर

कमलविना नदिजलविन ॥ जिवविना ज्यौं कायोरे ॥ वासविना फुलपयविन धेनु ॥ सी
विना ज्यौं जायोरे ॥ नर भ ० १ ॥ फलविन वृष्वपंखविन पंखी ॥ आतकि साविन मायारे
एविन पुत्रलूनविन भोजन ॥ कंठविना ज्यौं गायोरे ॥ नर ० २ ॥ मतीविन मंत्रिदेवविन
मंदिर ॥ वृष्वकि साविन द्वायोरे ॥ चंद्रविना निशिमुनिकिरियाविन ॥ मातकि सीवि
रे ॥ नर ० ३ ॥ शयनविन भोगजोगविन जोगी ॥ करविन ज्यौं असिपायोरे ॥ इगविन
नसत्यविन वातो ॥ घृतविन अन्नज्युष्यायोरे ॥ नर भ ० ४ ॥ दंतविनांगज अक्षरविन श्रु
त ॥ महिविन ज्यौं घनद्वयोरे ॥ गुरुविन ज्ञानसभाविन पंडित ॥ दयाविन वृषनसुहाया
रे ॥ नर भ ० ५ ॥ यौं जानि जिन धर्मकरो नित ॥ सफलकरो निजकायोरे ॥ अमुलिकसु
हिरा चंद्रकहत है ॥ पुण्यउदय अत्र आयोरे ॥ नर भ ० ६ ॥ इति ॥ ६ ॥ सुभावच ॥ देखो आ
इन करणी सौं ॥ बहुत जीव दुख पायोरे ॥ देखो ॥ टेक ॥ प्रथम व्यसन ज्वोर चिपांडवराज
पाटहर वायोरे ॥ वनचर समहोके निशि वासरा ॥ वनवन भैंभटकायोरे ॥ देखो ० १ ॥ राजा
वक्रमास भहन सेती ॥ दूर्गेतिके दुषपायोरे ॥ सुरापान करि छपनको टिसव ॥ जादवराज
रायोरे ॥ देखो ० २ ॥ सेठचारुदतगणिका सौरत ॥ निजघर दुखहरायोरे ॥ अपकीरति अइ

निवेश्ये नै॥ तारहस्ता निडुकायारो॥ देखो॥ ७॥ ब्रह्मदत्तचञ्जी पारधि सौ नरकमेजाय
वसायारो॥ शिवभुती ब्राह्मणचोरी कर॥ फिरफिर हंडु नरायारो॥ देखो॥ ८॥ तीनि बंडका
राजा रावण॥ परमणी सुलुजायारो॥ सिताकौहर अपजसपायो॥ कुनिनिजपाएगुग
यारो॥ देखो॥ ९॥ इक विसनसेती इतना दुखसवका कहां कहापारो॥ अशुभ बंधो डिशुभ
मारगलागो॥ हिरालाल नैगायारो॥ देखो॥ १०॥ शुभावच॥ समज देखजियइ न
जगमोही॥ कोइन साथी आवैरे समज॥ ११॥ टैका॥ सहनजिहांका तिहां रहैगा॥ धनघर
मे रहजावैरे॥ त्रियारहैगी घरघारनमै॥ पशुगोष्टामे रहवैरे॥ समज॥ १२॥ आततातस
सजनजन मिलकरा॥ नृपिमशानलग आवैरे॥ रहैगा तवचित्तामै॥ अंत अके लाज
वैरे॥ समज॥ १३॥ आय अके लो जाय अके लो॥ पाप अके लोकमावैरे॥ नरक गतिमें जा
य अके लो॥ १४॥ दुःख अके लो पावैरे॥ समज॥ १५॥ पुन्यउपाकर जात अके लो॥ सुरगानके उ
षपावैरे॥ नात्राकर मकी करत अके लो॥ मुकति अके लो जावैरे॥ समज॥ १६॥ तातैतजि
अधर्मधर्म करो॥ हिरालाल एह गावैरे॥ परलोक नमैं जिवके साथी पाप पुन्य दोय जावै
रे॥ समज॥ १७॥ इति॥ १८॥ शुभावच॥ याविधजोगि ज्योगसुरमतेती नकै सोवलिहारा

है। याविधः ० टेक। पंचमहाव्रतकं ध्याज्याकै॥ मुलिनतनसुविसारी है। मुलउतरगुण
पाणीसेती। सुरतिकरिपखारी है। याविध ० ॥ १६ ॥ दशअनुपेक्ष्यासीरजटा। उपसम
दंडज्युभारी है। पंचसमितिजंगोटाकसिकै। त्रीलकसोटाधारी है। याविध ० ॥ १७ ॥ संज्य
मक्रीडोलीशुभखंधै। फेरिपंचघरसारी है। दोकरखप्परआगेंमाडे॥ एषणसमितिअहा
री है। याविध ० ॥ १८ ॥ इंद्रिदमनक्रीकरीसारंगी। रत्वत्रयजिसतारी है। दुविधाधर्मकोनाद
सुनावत। चेतनअलखजगारी है। याविध ० ॥ १९ ॥ करुणकीमालाउरशोभै। परिषहअं
गकूंछारी है। रागदोषदुहुकानचिराकै। समकितमुद्राडारी है। याविध ० ॥ २० ॥ तनगु
फामेंवसतनिरंतर। ग्यानदिपकउजयारी है। तीनगुपतिमढीमांहीवसै॥ सुमता
गिनलारी है। याविध ० ॥ २१ ॥ अष्टकरमइंधनकीधूनी॥ ध्यानअगनसैंजारी है। दश
हणगुणचक्रफिरावत। आगमदृष्टिनिहारी है। याविध ० ॥ २२ ॥ तपगिरिवरचदिजग
रदेवैसिद्धनिरंजनभारी है। जहांदेखैतहंअवरनदेखै। परमपरापतिसारी है। या
० ॥ २३ ॥ सुकलध्यानपरिपूरणकरकैकेवलसिंगिगुजारी है। सुरनरफणिसीषआइतन
धिनागोरखगतिउचारी है। याविध ० ॥ २४ ॥ ऐसाजोगसुगुरुजेसाधै। तिनकीगतकबु

री है। अमुलिक सुत हिराचन्द कहत है। आवागमन निवारी है। या विध ०१०॥ इति ॥
बुमाच ॥ इन विधयज्ञ निरंतर करणों। निज परका हितकारी है। इन ०१०॥ टेक ॥ चिदानंदय
जमानयज्ञका। करणहार अतिभारी है। संतोषहि जज्ञ कि सामग्री ॥ होम कुंडतन धारीने
इन ०११॥ सवपरिग्रह होम योगपवस्तु। के शहर भहि उपारी है। लोचकि जे अरसवजीवद
या ॥ सोइ दक्षणाप्यारी है। इन ०१२॥ बहुरी ज्याके करणों का फल। सिद्ध सुपद वलिहारी रो। ऐसा
शुक्ल ध्यान है सोई ॥ प्राणायाम चितारी है। इन ०१३॥ सत्य महाव्रत थं भयज्ञ में ॥ जिस पशु
बंधै पारी है। इह चंचल मन सोइ पशु अर ॥ तप रूपा अग्नीजारी है। इन ०१४॥ पंचदं द्विइंधन
कहिये पहाय है। धर्मयज्ञ भवतारी है। कहत हिराचन्द यज्ञ पशुके। नरक नके अधिकारी
इन ०१५॥ इति ॥ १०॥ बुमावच ॥ त्रिभुवन नित्य चैत्यालय ॥ धोक त्रिकालहमारी है ॥ त्रिभु
वन ०१६॥ टेक ॥ सातकोडिवहतरीलख संख्या ॥ ७२००००॥ भुवनालय अधिकारी है। मध्यलो
क चारिसे अठवन ॥ ४५४॥ याम अहति मधारी है ॥ त्रिभुवन ॥ १०॥ व्यंतर सुर अरज्योति
क सुरके। गेह अ संख्य अपारी है। लख चौरामी सहससत्या नौ तेइस ॥ ४५४॥ उरध मजा
री है ॥ त्रिभुवन ०१७॥ आठकोड छपनलाष अरु। सत्तान वैहजारी है आरसै एक्यासी ॥ ४५६॥

१६७४१।सवमिलै॥जिनमंदिरसुषकारीहै॥त्रिभु०॥३॥इकइकघरमेंइकसेवसुवसु॥
 प्रतिमान्यारीन्यारीहै॥पंचवरणमणिमेंपद्मासन॥धनुषपांचसेसारीहै॥त्रिभु०॥४॥
 ठअडवतेतिसकिरोडफुनि॥बहतरिलाखठ३३६००००॥पतारीहै॥गुणचाससह
 चारसैचौसठ॥ध१६४॥मध्यअगारीहै॥त्रिभु०॥५॥कोडिइक्यानौलारववहतरी॥अ
 ठहतरिहजारीहै॥चारसैचौरासि॥१६६७४४४॥उरधमेंव्यंतरज्योतिकआरीहै
 त्रिभु०॥६॥नौअरवपचिसकोडि त्रिपणलवासताईसहजारीहै॥नौसैअठताल्लि
 १२५३२७१६४॥सवमुरती॥व्यंतरज्योतिकन्यारीहै॥त्रिभु०॥७॥अहृत्तिमअहृ
 मजनको॥मंदिरप्रतिमासारीहै॥कहतहिराचंदनितप्रतिवेदों॥भवजलतारणहारी
 है॥त्रिभुवनआठ॥इति॥११॥पदरागदीपचंदी॥कवेनिरगुंथस्वरूपधरुंगा॥तपकरके
 भलातपधरकोमुकतकंवरुंगा॥कवे०॥टेक॥अजिहांकबग्रहवासआससबछोडी॥क्र
 बवनमेंविचरुंगा॥बाह्यअभ्यतरत्यागिपरिग्रह॥अभयलिगसुधरुंगा॥कवे०॥१॥
 अजिहांहोयएकामेंपरमउदासी॥पंचाचारचरुंगा॥कबधिरज्योगकरीपदमा
 सन॥इंद्रिपदमनकरुंगा॥कवे०॥२॥अजिहांआतमथानसजीदलअपनो॥मोहअरी

लक्ष्मणा। त्यागिजपाधिसमाधिलगाकरा। परीषहसहनकरुं गा॥ कवे०॥ ३॥ अजिहांक
वगुणस्थानश्रेणिपरचढके॥ कर्मकलंकहर्षुं गा॥ आनंदकंदचिदानंदसाहिव
बिनसुमरेसुमरुं गा॥ कवे०॥ ४॥ अजिहांश्रैसीलबधिजबपाऊंतवमै॥ आपेआप
तर्षुं गा॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहे॥ वडुरिनांजगमैंपरुं गा॥ कवे०॥ ५॥ इति॥ १२
पदरागदीपचंदी॥ तुतोएहनरभवनिफलगुमाथे॥ फुलवनमैभलाफुलरणमै। माल
तिनैज्यौजायो॥ तुतो०॥ टेक॥ अजिहांश्रीजिनभक्तिपुजानहिंकीनी॥ जिनगुणमुव
थेनगायो॥ जैनसिद्धंतसुएयेंनहिकवह॥ विधिवततपनाधरायोतुतो०॥ १॥ अजिहांउ
तमपात्रकूंदाननदीनौ॥ आवनासनमैभायो॥ शिलरसननहिंपाल्योजतनकरापरति
यमांहिलुभायो॥ तुतो०॥ २॥ अजिहांउतमतीरथसाधुकीसेवा॥ धरममेधननालगायो
तत्वअतत्वविचारनक्रीन्है॥ समकितरतनहरायो॥ तुतो०॥ ३॥ अजिहांपरिग्रहआंरं
भवहुविधकरके॥ अहर्निशिपापकमायो॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहे॥ नरक
उपायउपायोमुतो०॥ ४॥ इति॥ १३॥ पदरागदीपचंदी॥ पदरागदीपचंदी॥ करोजिनयमे
सदाहितठानी॥ निजमनमैभलानिजदिलमै। समजकरप्राणी। करो०॥ टेक॥ अजिहां

धरमजिहाजसमानमहाहै॥तारकभवदधिपाणी॥धरमकरमपरवतचुरएानकौ
वज्रगदासमजानी॥करो०॥१॥अजिहांसुरगमुकतसुषयामचठनकौ॥धर्मसोपान
कहानी॥दुरगतिनरकदुवारोकरनकौ॥आगलधर्मवषानी॥करो॥२॥अजिहांधर
मसोइदशलखनसमकीत॥ज्यामैंदयाकीषाणी॥अमुलिकसुतहिराचंदकहतहोपा
पमिथ्यातकुजानी॥करो॥३॥इति॥१४॥पदरागदीपचंदी॥तजौजियआश्रवपापकि
नी॥एहनरकभलाएहनरकनिगोदकेदानी॥तजौ०॥टेका॥अजिहांपंचमिथ्या
हअतिदुरधर॥अविरतदादशाजानी॥उरकषायपच्चीसकहायो॥इनसुहोतव
हानी॥तजौ०॥१॥अजिहांपदुहजोगकहेदुषदायक॥कौंनतजोअनिमानी॥चा
सपकरिदारसतावनारोकिएआवतपाणी॥तजौ०॥२॥अजिहांजिनइनसेयेते
दुषपायो॥नयेहोनरककेथानी॥जिनइनत्यागकियोतेपलकमैंमुक्तिलहीसुष
णी॥तजौ०॥३॥अजिहांअमुलिकसुतहिराचंदकहतहो॥इटपटकुमताकुजानी॥
वसिखमानसमजिकबुचेतन॥सुमताकरोपटराणी॥तजौ०॥४॥इति॥१५॥पदराग
दीपचंदी॥धरोदिदधर्मसुआतमज्ञानी॥शिवसदनभलाशिवमहलचठनकीनि

नीधरो०॥ टेक॥ अजिहांत्यागवैरागभयेदोयदाह सुंदररचनांठांनी॥ दशविधिधरम
बदारमहाहै॥ सोईसिवानकहानी॥ धरो०॥ १॥ अजिहांजेइसथमेनिसेनिचटनको
चाहतमुनिजनध्यानी॥ ज्ञाननपनकरिनिरखिचटतजे॥ सोइवरेशिवराणी॥ धरो
०॥ २॥ अजिहांइंद्रनरेंद्रखगेंद्रभुवनपति॥ वांछतनिशिदिनज्ञानी॥ अमुलिकसुत
हिराचंदकहतहै॥ निश्चयनिजवरआनीधरोदिट०॥ ३॥ इति॥ १६॥ समाधिमरण
पद॥ जपोनवकारमहासुप्रकारी॥ ज्यांसौसुधरैमलाज्यासौसुधरैसमाधितुम्हारी॥ ज
पो०॥ टेक॥ अजिहांदरज्ञानज्ञानचारित्रमहातप॥ आराधनाइहचारि॥ अरहंतसि
धसुसाधुधरमफुनिशरणगहोएचतारि॥ जपो०॥ १॥ अजिहांछादशअनुपेक्षावरथा
वो॥ दशविधिधरमेसंभारी॥ छपनपैतिसशोलषट्पणचौ॥ दोएकवरणउचारि॥ जपो०
॥ अजिहांवाविसत्यागिअनक्षअसंजमासप्तव्यसनपरिहारी॥ वारवतमनमेंद्विदरा
यो॥ असंख्यसल्लेषनाधारि॥ जपो॥ ३॥ अजिहांसमेदशिखरअरगोमटल्यामी॥ सेउ
जोगिरनारी॥ सांगीतुंगीकैलासतारंगो॥ तिर्थेसंभालोहेभारी॥ जपो०॥ ४॥ अजि
हांउतमत्तेमासवसेकरके॥ आशासल्यनिवारी॥ अंतसमयवैरागसंभालो॥ धर्मसु

ध्यानविचारी॥ जपो॥ १॥ अजिहोपदस्थपिंडस्थरुपातीत॥ ध्यानएच्यार
तारी॥ अमुलिकसुतहिराचंद्रकंहतहै॥ भोगतहोज्योहमारी॥ जपो॥ ६॥ इति॥
१७॥ पदरागभैरवमैं॥ विनसम्यक्ततरेजिवनाही॥ कालअनेंतफिरेभवमां
विन॥ ०॥ टेक॥ जिनगुणकितेनशास्त्रपुराणहि॥ अवएकरैजोनिनिप्रतिच्याही
सत्यजिनागमतत्वार्थोदिक॥ सूत्रसिद्धांतवखानकराहि॥ विन॥ १॥ फुनिदश
दोणिकधरमपालै॥ तेरहविधचारित्र्यधराही॥ लाषकोटउपवासकरिकै॥ सो
सकलदेहअधिकाहीविन॥ २॥ जीवनखंडीमुनिवरहोकरा॥ ध्यानमहानअ
लकराही॥ वरखारिदुमैंतरुतलवैठी॥ तपस्याकरहिविशेषतहाही॥ विन॥ ३
सितकालदरियावनदीतटा॥ रहकैसीतवहोतसहाही॥ शिषमसमयगिरसीख
ऊपरज्याकरज्योगसधैधिरग्राही॥ विन॥ ४॥ सामायकतपजपदानपुजा॥ वा
विसपरिषहसहतसदाहै॥ इतनाकियाधरमफलभोगी॥ फिरत्रसथावरमैंभट
ही॥ विन॥ ५॥ थाथारतिमविकलेंडिअसंज्ञी॥ म्लेच्छनिगोटकुभोगभुमाही॥ व्यंतर
ज्योतिषभुवनालयमैं॥ द्वितियादिकषटनरकनज्याही॥ विन॥ ६॥ एवाधिसकव

निनहोहै। सम्यग्दृष्टिजीवजेताही। कहतहिराचंदतारतम्यतै। समकितआतमअनु
भोआही। विन०॥ ७॥ इति॥ १४॥ पदरागभैरव॥ सतरानेमुकरोनितप्राणी। आवककोआ
चारसुजानी। सतरा०॥ टेक॥ नोजनलीजेगीनतीमाफिकसचितवस्तुराखितेखानी। य
रमंदिररहनैकीगिएती। रासंगामनकीहदठानी। सतरा०॥ १५॥ दिशागमनकीअवधी
करणी। ऊषधआदिविलेपनआनी। तांबूललौंगयेलचिसुपारी। पुष्यसुगंधसुंघनउ
नमानी। सतरा०॥ १६॥ नाचख्यालदेखनमरजादा। गीतनादसुननाफुनिकानी। स्ना
नकराणराखेतोकराणो। ब्रह्मचर्यसंख्याठहरानी। सतरा०॥ १७॥ आश्रयणपहरनकिप्रतिश्र
वस्त्रवाहनिनइएपुरानी। चोकिपाटतकियादिविच्छेनां। सेजपलंगप्रमाणप्रमाणी। सत
रा०॥ १८॥ बाहनआदिसतरयहसवनिशि। सामायिकपिछेयादिल्यानी। इहभवसुरगहिर
चंदलहसी। अनुक्रमहोहैकेवलज्ञानी। सतरा०॥ १९॥ इति॥ १॥ पदरागचालहीरी। दुल्लेन
नरअवताररेदेखोदशादियांतै। दुल्लेन०॥ टेक॥ चोलकपाशाकथान्यद्युतमणिसुपनच
क्र। कुर्मैयुगपरमाणुसाररेदेखो०॥ १॥ आवककोकुलदुरलभआइ। अथेकोद्वयभंडारे
देखो०॥ २॥ जैनधरमअतिमिलबोदोहिलो। चिंतामणिदधिडाररे। देखो०॥ ३॥ उरकठिनश्र

अन्नदेशपावनां ज्ञानविवेकविचारैः॥ देवो॥ ४॥ देहनिरोगसुसंगतशक्तीः॥ इंद्रीसु-
 अयारैः॥ देखो॥ ५॥ सर्वमैंदुरलभसम्यकदर्शने॥ चौपथरतनवजारैः॥ देवो॥ ६॥
 हतहिराचंद्रसार्थककरल्यो॥ एहअवसरमनोहारैः॥ देखो॥ ७॥ प्रति॥ २०॥ पदराग-
 लहोरी॥ धिगधिगइहसंसारैः॥ कछुसारनदीसे॥ धिगधिग॥ टेक॥ कदलिबंधविच-
 रननिकसै॥ ज्यौंइसजगतमैंजारैः॥ कछुसा॥ १॥ कनककामनिसेजगमोह्यो हो
 प्रज्ञानगमारैः॥ कछु॥ २॥ ज्याकेकारणइतनांकरिए॥ सोतोनाआवेलारैः॥ कछु॥ ३॥
 जातैंचउगतिमांहिअमएकै॥ चक्रजेसाकुजारैः॥ कछु॥ ४॥ ज्यासौंदुखघडिया
 ज्यौंइलरीपावतमारैः॥ कछु॥ ५॥ अतिपरिचयतिसहोइनिरादर॥ इसअनादर
 गारैः॥ कछु॥ ६॥ सेवनकरतबहुतपियलागे॥ परभवकठिनअरारैः॥ कठिनअरा
 कछु॥ ७॥ ज्योरिनकरतचितहरखितकै॥ देवतफारैः॥ कछु॥ ८॥ यामैंसारथातो
 तोतिर्धकरादिउदारैः॥ कछु॥ ९॥ कहतहिराचंद्रजिनइनत्याग्यो॥ सोउ-
 पारैः॥ कछु॥ १०॥ इति॥ २१॥ पदरागचालहोली कायकूंरोवतपुकारैः॥ कछुपा-
 लीनआवैकायकु॥ टेक॥ शोकतैंपरभवश्रीतैंउदेकै॥ ज्यौंविजत्योंफलडारैः॥ क-

छु०॥१॥ एकवेरसबकं मरणं है॥ जेते संसार मझारो॥ कछु ग॥ मूये मरत मरसी धिति हे
ते संवका एक प्रकारे॥ कछु०॥३॥ पर मरतारो वै तो खं मरता॥ रोव हिरो वै अपारो॥ क
छु०॥४॥ जो न पज्या सो निश्चै मरे गा॥ उदय अस्त र विलारो॥ कछु०॥५॥ ओर कि मृत्यु गि
नै मूट प्राणी॥ स्वमरण न लखै यारो॥ कछु०॥६॥ ज्यौं नो कारूट न रचा लै पै॥ न लखै स्वग
मन लिगारो॥ कछु०॥७॥ जस वृष सुख कछु लान होय तो॥ रोवो संभार संभारो॥ कछु
०॥८॥ इन चउ मै न एक कौरो वत वारं वारो॥ कछु०॥९॥ तातैं शोक न कि जे हिरा चं
द॥ अनुपे दा चित धारो॥ कछु०॥१०॥ इति॥२२॥ पद राग चाल होली॥ वा विस एह अखा
नरे तजि ए अघ खानी॥ वा वि०॥ टेक॥ वैग न विद लव ह विज उरा॥ निशि भोजन संधान रे
तजि ए०॥१॥ पीपर वर उंवरि कंठुं वरि॥ पाकरि फल जो अजाने॥ तजि०॥२॥ कंद मूल पूल विष म
धु मही॥ मांखन मदि रापाने॥ तजि०॥३॥ फल अति तुच्छ तुषार च लित रसा॥ एदय वीस प्रमान रे॥
तजि०॥४॥ कहत हिरा चन्द इह नहिं चाखै॥ सो आ वक परधान रे॥ तजि०॥५॥ इति॥२३॥ पद राग ग
जल॥ नगवान आदि नाथ जिन सुमन मे रालगा॥ आराम मुझे होत है दुःख दर्श सुभगा॥ नग
वान०॥ टेक॥ मरु दे विनंद धर्म कंद कुल में सुर उगा॥ नृप नाभिराज के कुमार नमत सुर खगा॥ न

गवान् ॥ १ ॥ जुगलानि वारिधे मे कै जंजाल कौतगा ॥ वसुकर मरुज राय शिव पंथ मै प
 ॥ भगवान् ॥ २ ॥ अश्रवतो करोसिता विमहर वानिदिल लगा ॥ कहै दास हि रालाल
 मुक्त कामगा ॥ भगवान् ॥ ३ ॥ इति ॥ २४ ॥ पदराग गजल ॥ इग ज्ञान खोल देख
 मै कोइ नासगा ॥ एक धर्मै विनास व असार हंस मै वगा ॥ इग ज्ञान ॥ टेका ॥ सुतमा
 ततात आइ वंध घरतिया जगा ॥ संसार जलधि मै सदा एक रत है दगा ॥ इग ज्ञान ॥ १
 धन धान दासि दास नाग चपल तरंगा ॥ इंडु जाल के समान सकल राज नृप खगा ॥
 ज्ञान ॥ २ ॥ तन रूप आयु जोवन वल भोग संपदा ॥ जेसा डाभ अ निविंदु उर नप
 कगा ॥ इग ॥ ३ ॥ अमुलिक सुत कहत हि रालाल दिल लगा ॥ जिन राज जिनाग
 सुगुरु रण पै पगा ॥ इग ॥ ४ ॥ इति ॥ २५ ॥ पद संग गजल ॥ षट्कर्म जे गृहस्त नित्य
 त्य आचरो ॥ जातै नवसमुद्र वीच फेर नापरो ॥ षट्कर्म ॥ टेका ॥ तिन काल वीतरा
 देवकी पुजा करो ॥ फुनिस डुरु कसेवा जाव जाकी आदरो ॥ षट्कर्म ॥ १ ॥
 यनित्य पंचनेद सुकरो खरो ॥ उर संजम विख्यात सात भात चित थरो ॥ षट्कर्म ॥
 २ ॥ तप द्वादश प्रकार शक्ति सार आगरो ॥ सदा काल चार दान पात्र कुंअ नसरो ॥ षट्कर्म ॥ ३ ॥

लबुल्लिचकिउखलबुहारिस्त्रिपकुअघबुरो॥षष्टमद्वयउपाजेन्यनारपुरषसिरु
शोषट०॥१॥अमुलीकनेदकहतहिराचंदव्येवरो॥एहषष्टदोषषष्टपुण्यकमेतैहरो
षटकमे०॥५॥इति॥२६॥पदरागगजल॥गिरनारगया॥आजमेरानेमदेदगाखा
वन्विनामैवचाकरुंदिलश्यामसैलगा॥गिर०॥टेक॥वलनदृकिसनजादवस
वसाथलेसगा॥व्याहनकूसजिआयेजिनकेलारुरखगा॥गिर०॥१॥पशुकापुकारसु
नकेगणनदीलमैजगा॥चलेछोडपशुबंधसंज्यमथानमैपगा॥गिरनार०॥२॥अमु
लिकसुतकहतहिरालालदिललगा॥तवैराजमतीनेंहिघरवारकोतगा॥दिलद
र०॥३॥इति॥२७॥पुदरागगजल॥तकसीरविनाछोडचलेहमसेक्यौपिया॥अवै
क्याकरुक्रितजाउनिकसजातहैजिया॥तकसीर०॥टेक॥करुणानिधानस्वोषिप
शुबुडायकेदिया॥मेरिक्यौनदयाआतिकठिनक्यौहिया॥तकसी०॥१॥तुमतोहमा
रेनाथअष्टनवकिमैतिया॥सोइनेहआजहमसुकैसाछोडकैदिया॥तक०॥२॥कहे
नेमएसंसारसवअसारहैतिया॥एससुएकेहोरानुलनैभ्रषणडारकेदिया॥तक०
३॥अमुलिकसुतकहतहिरालालसुनजिया॥नेमनाथसाथज्याकेसंज्यमसारत

पलिया ॥ त क सी ॥ १५ ॥ इति ॥ २४ ॥ पदरागकार्फ ॥ तुमत कर मेरा मेरा ॥ कोइ नही ज
मैतेरा तुमत ॥ १६ ॥ टेक ॥ जननिजनकतिय जगनिकनकधिया ॥ नहि भरोसा इ
केरा ॥ तुमत ॥ १७ ॥ किसकी रिसंपति ॥ किसकी संततरा ॥ किसका एह घर डेरा ॥ तुमत ॥
राजकाजहयगपरथशिविका ॥ विनसत नलगोवेरा ॥ तुमत ॥ १८ ॥ मीनरहेजि
तनखिरनिरज्यौ ॥ त्यों विनसततनतेरा तुम ॥ १९ ॥ बाह्यवस्तुकी कौनकथाहे ॥ पुत्र
तियादिघनेरा ॥ तुम ॥ २० ॥ पांचदिवसको मे लोरे ॥ आई अंतमशानवसेरा ॥ तुम ॥ २१ ॥
चिन्नरहत अबुजज्यौ जलमैं ॥ त्यों सबतै तुअनेरा ॥ तुम ॥ २२ ॥ अमुलिकसुतहिरा
न्दकहै ॥ नजअरिहंत भलेरा ॥ तुम ॥ २३ ॥ इति ॥ पदरागदेवधुम ॥ मेरी अरजसु
महाराजा होजिनराजाजी ॥ मेरी ॥ टेक ॥ मैदुखिआदअनादिकालको ॥ सोदुख
मेंधारे ॥ अटक्यो नर्के निगोदनमांहि ॥ सोप्रभुदुःखनिवाये ॥ होजिन ॥ २४ ॥ देनिगो
गतसातसातलषवेरअनंतहिज्यामैं ॥ एकसासमैं ज्यामगमरणहिनाअठारहवां
होजिन ॥ २५ ॥ कायप्रथविअपतेजवातचहु ॥ सातलपयाई ॥ दशलषवनसपती
यनकी ॥ ज्योनलहीदुखहोई ॥ होजिन ॥ २६ ॥ वेइंदीतेंदी चोइंदी ॥ दोदोलषदुखपा

यो॥ फेरतिरजं च ज्यौ न लख चारी॥ हो जिन ०॥ १॥ साहे नर लख चार ज्यौ न दुख ॥ छेद
न भेद न जाणौ॥ देव न यो लख चार ज्यौ न भौं॥ रं भारू प लु जानौ॥ हो जिन ०॥ २॥ म नुष
जन म चोद ह लष न ट क त ॥ तु म सेषा व न पा या ॥ अ व नि ज प द घो हिरा चं द कूं चौर ना
सी दु ख गा यो ॥ हो जिन ०॥ ३॥ इति ॥ ३०॥ पद रा ग दे व क्र म ॥ देवो नि ज म न मां हि वि
चार ॥ आत म ज्ञा नी जी देवो ॥ टेक ॥ का हां सु धार स अर विष क ह ॥ हो ही क्यौ स म हो इ ॥
त्यों जिन दे व कूं अ व र दे व क्री ॥ उ प मा न ल गै की इ ॥ आत म ०॥ १॥ क हां कों च न व हु री लो
ह क हां ॥ कै सि व रा व रि क र नी ॥ त्यों जिन म त कौ ॥ उ र म त न कौ ॥ क्यौ क र उ प मां ध र नी
आत म ०॥ २॥ क हां ग ज रा ज अ र क हां रा स न ॥ क्यौं क र स म तो ली जे ॥ त्यों जिन य म
कु अ न्य थ मे की ॥ उ प मा क्यौं क र दी जे ॥ आत म ०॥ ३॥ क हां श्री रं व ड फु नि क हां कै र व क्यौ
क र स म न मो हे ॥ त्यों नि रं थ स ग्रं थ गु र न की क वे न उ प मा सो हे ॥ आत म ०॥ ४॥ क ह
सु मे र अ र क हां प र व त ॥ क्यौं क र स मा न हो ही ॥ त्यों मु ल सं घ कु अ व र सं घ की ॥ न ल ग
उ प मां को ही ॥ आत म ०॥ ५॥ पंच र त न ए सा र ज ग त में ॥ डु ठ डार कै दे ना नां ॥ अ मु लि
क नं द हि रा चं द क हे ॥ सां च प र्ष के ले ना ॥ आत म ॥ ६॥ इति ॥ ३१॥ पद रा ग ॥ क्यौं ध र

मां हि भुल्योऽत्र भागी ॥ क्यौं घर ० ॥ टेक ॥ धरमसुध्यानकर एणकुमुद्योत् ॥ पापक
 एक्फूल्योऽत्र भागी ० ॥ १ ॥ कालअनंततुइ नकर एणिसौ ॥ नरकनिगोदरुल्यो ०
 भागी ० ॥ २ ॥ मोहमदिरापानकरिकैं ॥ कर्महिंडीलेइल्यो ॥ अत्र भागी ० ॥ ३ ॥ कहतहि
 चंदनरभवपयो ॥ अत्रतुजभागखुल्योऽत्र भागी ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३३ ॥ पदराग ॥ तेरा
 कोइ सुएतेरानकोइ ॥ सुएभैयावे सुएतेरा ० ॥ टेक ॥ मातपितासुतआईकुटंवसवा
 स्वारथकैसगौपावे ॥ सुएतेरा ० ॥ १ ॥ सुषमैं आकरनेहलगाते ॥ कष्टपरेये भगौपावे
 सुएतेरा ० ॥ २ ॥ इनमायामें वंधरह्योकैं ॥ धर्मध्यानविसरै पावे ॥ सुएतेरा ० ॥ ३ ॥
 लिकसुतयौं जांनिहिराचन्द ॥ धर्मकरोचितदै पावे ॥ सुएतेरा ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥ पद
 गवमावच ॥ भजोरे भयाश्रीजिनभावधरी भजोरे ० ॥ टेक ॥ पैशानलागौरुपि
 नलागौ ॥ नालागौदमरी ॥ भजो ० ॥ १ ॥ नाघरजावैनादुखआवै ॥ खरचतनागठ
 जोरे ० ॥ २ ॥ जनमजनमकापापकटैगा ॥ सुमरतएकघरी ॥ भजोरे ० ॥ ३ ॥ कहतहि
 राचन्दनजननज्याकैं ॥ सौमुखधूलपरी ॥ भजोरे ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥ सुखियानदिसै
 कोइ ॥ १ ॥ याजगमाही ॥ २ ॥ सुखिया ० ॥ टेक ॥ कैइककामिनिकारणिडुरता ॥ कैइककै

तनां हि सुषिया ० ॥ १ ॥ कि स हि कै तिय क ल हि कुरु पी सु दर तो ह ठ ग्रा ही सु खिया ० ॥
२ ॥ कै इ कु ग्राम म्ले ष्य ल ज प जै सु क्त त हि न प च्छ ता हि सु षिया ० ॥ ३ ॥ कै इ नि
ध न अ रू रो ग पि डित त नु ता तै दु खि अ धि का हि सु खिया ० ॥ ४ ॥ कै इ क पु त्र क ल
त्र वि यो गो सो चि त कै विल ला हि सु षिया ० ॥ ५ ॥ कह त हि रा चं द सु खि सं तो षि ॥ अ
प्र दु षी स व आ ही सु षिया ० ॥ ६ ॥ इ ति ॥ ३ ५ ॥ प द रा ग कै र वा में जि या कां इ सो वो
र दि न रा त डिया ॥ दि न रा त डिया दि न रा त डिया ॥ हारे जि या कां इ सो वो ॥ टे क इ ह
व ह मु वा ऽ ज य म तु र व ज त ये ॥ कै न ड र त नि ज घा त डिया ॥ जि या ० ॥ १ ॥ घ डी घ डी
या ल व ज थि त ॥ ज म आ दे गो ला त डिया ॥ जि या ० ॥ २ ॥ ज य त प सं ज्य म दान पु जा व्र
ता ॥ उ र क रो जि नि जा त डिया ॥ जि या ० ॥ ३ ॥ जो नि ज हि त क छु चा है हि रा चं द ॥ तो सु
ए स द गु रु वा त डिया ॥ जि या ० ॥ ४ ॥ इ ति ॥ ३ ६ ॥ प द रा ग कै र वा में ॥ चालो चालो भ वि क ज
न आ ज ॥ शि ख र गिर पू ज न वं द न को ॥ चालो ० ॥ टे क ॥ वी स टों का पर वी स जि ने श्व र
मु ग त ग ये म हा रा ज ॥ शि ख र ० ॥ दे श दे श को सं ग तु आ वै ॥ पू ज त शि व सु ष का ज ॥ शि
ख र ० ॥ २ ॥ चै त्र न र त में ए स म न्नां ही ॥ स व ती र थ शि र ता ज ॥ शि ख र ॥ ३ ॥ न र क प शु

दोनुगतनासत॥अनुक्रमशिवपुरराज॥शिवर०॥१॥अमुलिकसुतहि
न्दकहतहे।दरशनद्योजिनराजशिवरा॥१॥इति॥३॥पदरागकैरवामे मेश
नमसफलनयाआज देषागडमांगीतुंगीका।मेरा०॥टेक॥ज्यापरवतपरन्यानु
कोडीमुगतगयेमुनिराज।देष्या०॥१॥चंडनाथअरंपाश्वेषुनुका॥मंदरवन्याशि
वकाज॥देष्या०॥२॥आजसुफलदिनआजसुफलघडी॥दुष्टकरमगयेआज
देष्या०॥३॥अमुलिकसुतहिराचंदकहतहे॥आजसरेमेरेकाज॥देरव्या०॥४॥इ
रु॥पदरागकैरवामे देषेदेषेमहामुनिराज॥गाएदुषमोसवभवके।देषे
०।टेक॥ज्यौरविदेषततमसवनासत॥त्यौतुमदेरवतआजागा०॥१॥आ
नदैतुमदरशनपायो घन्यघडीदिनआज॥गये०॥२॥तुमप्रनुस्वामीभवसार
तारणतरणजिहाजा गये०॥३॥अमुलिकसुतहिराचंदकहतहे॥अजरअमरभ
प्राज॥गये०॥४॥इति॥३॥वसिकरइंद्रियभोगनुजंग॥इंद्रियभोगनुजंगव
सिकर०।टेक॥कागदहथनीलखीस्पशेनते॥वंधीपडतमंतंग॥वसिकर०।रस
नाकैरसमच्छलिंगलीकौ॥खेंचतमरतउमंग॥वसिकर०॥२॥कमलपरीमलना

शारतकै॥ प्राणगमावतभृंग॥ वसिकर०॥ ३॥ नयनअक्षमोहेद्वपलावै॥ दीपक
द्वेषितंग॥ वसिकर०॥ ४॥ करणेंद्रियवसंधंठारवतै॥ पारधिहनतकुरंग॥ वसि
कर०॥ ५॥ इकइकविषयकरीएसतोव्याकहुपएकारंग॥ वसिकर०॥ ६॥ खाजिखु
ज्यावतहसैफिररुवैत्यौइनकापरसंग॥ वसिकर०॥ ७॥ कहतहिराचंदइनजीति
सोषावैसोखअभंग॥ वसिकर०॥ ८॥ इति॥ ९॥ पदरागठूमरी॥ मैज्योगीहोकैजा
उरे॥ मैज्योगीहोकैजाउरे॥ एसीमेरीभावनामैज्योगी॥ टेकाकवमैरागादिकपर
एतितजी॥ सुमतासुंलोलाउरे॥ एसीमेरी०॥ १॥ मनवचतनतिनज्योगकरीथिर
आतमथ्यानलगाउरे॥ एसीमेरी०॥ २॥ होयखिपकअणीपरआरुढ॥ मैचारितमोह
नसाउरे॥ एसीमेरी०॥ ३॥ चारकरमकौघातकरिकै॥ केवलज्ञानउपाउरे॥ एसी०॥ ४॥
शोषकरमकौजलअंजलिदे॥ शिवपुरवासवसाउरे॥ एसी०॥ ५॥ कहतहिं॥ हिराचंदइ
ससंपतितै॥ फेरनभवमैआउरे॥ एसी०॥ ६॥ इति॥ ७॥ पदरागठूमरी॥ महामंत्रबु
मुखसैबोलरो॥ एसीकांईभूलपरी॥ माहामंत्र०॥ टेकापांचूपदकेपेतिअब्र॥
एनवकारसखोलरो॥ माहा०॥ १॥ जंतरमंतरआदीकोइनहीइसतोलरो॥ माहामंत्र

०॥२॥ स्वानापीनामुखसेसो॥ वेसवकामनिठोलरो॥ माहा०॥ ३॥ पचाससागरकोअ
घशो॥ इकपदजयतअडोलरो॥ माहामंत्र०॥ ४॥ कल्पतरुकामगवीएही॥ चिंताम
मोलरो॥ माहा०॥ ५॥ कहतहिराचंद्रइतनसवसाधना॥ उरकाकपटदेखोलरो॥ मा
मंत्र०॥ ६॥ इति॥ १॥ पदरागङ्गडोटीजीक्षा॥ बुधजनजोसदापरनारी॥ बुधजन
टेक॥ परनारीसराजारावणनीजसंपतिसबहारी॥ बुध०॥ १॥ धवलश्रेष्ठिपरतिय
नसाकरिनरकगयोसिलडारी॥ बुध०॥ २॥ उरवहुतजियइतनसंगतते॥ दुरगत
येधारी॥ बुध०॥ ३॥ परवधुसेवनदुष्टमहाहे॥ नरकगमनकीवारी॥ बुध०॥ ४॥ कहत
हिराचन्द्रनत्यागनतौ॥ मुकतिवरोतियप्यारी॥ बुध०॥ ५॥ इति॥ ६॥ पदरागङ्ग
टीजीक्षा॥ शिलव्रतधरोसदानरनारी॥ शिलव्रत०॥ टेक॥ श्रीलेसीतारामकीरा
अगनिकुंडभयोवारी॥ शिलव्रत०॥ सेठसुदर्शनसीलप्रभावे॥ सिंहासनभयोसु
दारी॥ शिल॥ १॥ दोपदिअनंतमतीचंद्रनादिक॥ विघनगयोभयकारी॥ शिल॥ ३॥
शिलतजीअमृताअभयामती॥ कुलकुलगाईगारी॥ शिल०॥ ४॥ साहसगतिरावण
मिलावे॥ मरिगयेनरकमज्ञारी॥ शिल०॥ शिलतणीनववाडिहिराचंद्र॥ सुरगमुक

कीवारी॥ शिल०॥ ६॥ इति॥ १॥ ध॥ पदरागङ्गोटीजीह्या॥ इसतनपरीकरोमतयारी॥ इस
तन०॥ टेका॥ हाडमालनसाजालरुधिरपलाचरमनसुंमदिसारी॥ इसतन०॥ १॥ रोम
रेतमिलसातथातयह॥ अशुचिअपावनासारी॥ इसतन०॥ २॥ मातपिताकेविरजसु
अपजेप्रकृतिधिनावनहारी॥ इसतन०॥ ३॥ रोगक्लेशकाधामएहीहै॥ मलमूत्ररकि
अंडारी॥ इसतन०॥ ४॥ लोहअगनिसंगतघनताडनताडन॥ त्योंइनसौंदुखना
री॥ इसतन०॥ ५॥ कहतहिराचंदएसिजानिकौ॥ मुनिजनममतनिवारी॥ इसतन०॥ ६
इति॥ १॥ ध॥ पदरागङ्गोटी॥ जीह्या॥ समकितविनाक्रियारदसारी॥ सम०॥ टेका॥ दान
प्रजावृत्तनेमकरोतो॥ ज्योहिविघ्नोवतवारी॥ सम०॥ १॥ सोलभावनाइगविनअई
अंकविनासुन्यधारी॥ सम०॥ २॥ शास्त्रविनासुरगडविनगोपुर॥ कंथविनाज्यौनारी॥ स
म०॥ ३॥ नीवविनाघरमुलविनतरुवर॥ सुपविनाज्यौंरारी॥ सम०॥ ४॥ कहतहिराचन्द
दर्शनशुद्धी॥ तिर्थेकरपदकारी॥ सम०॥ ५॥ इति॥ १॥ ध॥ पदरागङ्गोटीजीह्या॥ जिनपद
पुजोसदासुखकारी॥ जिन०॥ टेका॥ जलगंधाक्षतपुष्पचरुदीपाधूपफलअर्घजता
री॥ जिन०॥ १॥ मयनासुंदरीश्रीपालपुजाकरि॥ कुष्टरोगगयोहारी॥ जिन०॥ २॥ दाडु

रपूजनभावधरैषा॥ देवभयोअघटारी॥ जिन०॥ ३॥ ग्वालपालधनदत्तपुहपसौ॥ नृ
 पकरकुंडयोभारी॥ जिन०॥ ४॥ सोपुजनिकसवहोसिहिराचंद॥ मदमखरसवखारी॥ जिन
 ५॥ इति॥ ६॥ पदरागडंजोटीजील्ला॥ भविजनसवैचलोगिरनारी॥ भविजन०
 क॥ सोरठदेशमैगिरवरसोहै॥ सवजनकोहितकारी॥ भविजन०॥ १॥ कोडवहोतर
 तसैमुनिवरानेमजिवरीशिवनारी॥ भवि०॥ २॥ मनुषजनमनिजसफलकारीजेपुज
 करअष्टप्रकारी॥ भवि०॥ ३॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहेपुनुद्योदरशानसुषकारी
 विजन०॥ ४॥ इति॥ ५॥ पदरागडंजोटीजील्ला॥ हलधरमुनिभयेअतिभारी
 हल०॥ टेका॥ राजकाजसवसुषसंपतिकै॥ तएसमदेकरडारी॥ हल०॥ १॥ पंचम
 व्रतपंचसमितसो॥ तिनगुपतिउरथारी॥ हल०॥ २॥ षादशविधिशुभतपकंपालादु
 परिग्रहटारी॥ हल॥ ३॥ दशलच्छनमनधरमधरतहै॥ वारभावनाप्यारी॥ हल०॥ ४॥ धार
 यभंडारसोहै॥ सहतपरीषहयारी॥ हल०॥ ५॥ अष्टाविसमुलगुणउतरगुण॥ लखच
 सासिसवारी॥ हल०॥ ६॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥ चरणकमलवल्लिहारी॥ ह
 ल०॥ ७॥ इति॥ ८॥ पदरागदादरा॥ मनवाजिनकेचरणचितधरण॥ मनवा०॥ ९॥

क॥ डुठीरेमायामोहमृगजलमें॥ नाहककायकुमरणा॥ मन० ॥ १॥ श्रीजिन्ननामकाज्ञा
हाजवनाकर॥ भवदधिपारउतरणा॥ मनवा० ॥ २॥ इन्नविनधुंडततीनजगतमें
जरनहिकहिशारणा॥ मनवा० ॥ ३॥ कहतहिराचंद्रनपरसादे॥ जनममरण
दोउहरणा॥ मनवा० ॥ ४॥ इति॥ ५॥ पदरागदादरा॥ जियराकरुणाधरमनीतकर
णाधरमनीतकरणाधरमनीतकरणा॥ जियरा० ॥ ६॥ सवकंबलअजिवसरिषाहे॥
घाटवाधनहिवरणा॥ जिय० ॥ १॥ धर्मदयाषटमतमेंपुकारे॥ पालेसोअलाउच्चरणा
जियरा० ॥ २॥ निजसमसवजिवज्यौवहुवरणगौ॥ दुधमेंमफेरकछुपरणाजियरा
० ॥ ३॥ निजकंटकलगेदुखकितनाकै॥ परपैक्योअसिधरणा॥ जियरा० ॥ ४॥ वषउत्प
नकीमातदयाहे॥ तातैयातसुडरणा॥ जियरा० ॥ ५॥ हिंसाकरिकैधरमसधैतो
कायकुदृषआचरणजियरा० ॥ ६॥ धिवरपारधिस्वर्गसिधायेगे॥ नर्ककुविनका
विचरणा॥ जियरा० ॥ ७॥ जोअहिमुखमेंअमृतनिकसे॥ तोहिसामेंदृषअरणाजि
यरा० ॥ ८॥ अपनोंकुटंवसवयज्ञमेंडुकणा॥ परजिवकाहेकुहरणा॥ जियरा० ॥ ९॥
परपिटपापउपगारपुणसो॥ सवश्रुतसारएवरणा॥ जियरा० ॥ १०॥ कहतहिरा

लालजीव दया करे। तो भवसागर तराणा। जियरा ०॥११॥ इति ॥५१॥ पदराग
 रठतालजात्रका ॥ गावतजिनगुणगंभीरसुरनरखगकारी ॥ गावत ०॥ टेका ॥ प्रा
 डीकेवलसुज्ञानसमवसरणधनदआन ॥ रचतभयोतिनहिथानहरखहि
 येथारि ॥ गावत ०॥ १॥ सिंघासनमणिविचित्रप्रातिहार्थ्यसहितचित्राअंतस्त्रिजि
 नपवित्रावैठेअघहारी ॥ गावत ०॥ २॥ वाणिद्धरतजिनउदारसकलअरथसहि
 तसार ॥ सुनतहरतभवविकारासवजनहितकारी ॥ गावत ०॥ ३॥ वजतहेमृदंग
 पंगवासरिअरविनउतंग ॥ लोकहोतसुनतदंग ॥ नाचतनरनारी ॥ गावत ०॥ ४॥
 नावतकरजोरिभालअमुलिकसुतहिरालाल ॥ द्योनिजसंपतक्रिपालाअरज
 हमारी ॥ गावत ०॥ ५॥ इति ॥५२॥ पदरागदादरा ॥ संसारसारजूठारेदेखोप्यारेसं
 ०॥ टेका ॥ खसखसफूल्यतुल्यउपरलालिलालहे ॥ नीचेमणैमूलकालकुटारे
 देखोप्यारेसंसार ०॥ १॥ असकोवृंदरपणकोरेसुपनो ॥ डालुसेपानजेसाहुटारे ॥ दे
 ०॥ २॥ किनकिरेलडकीकिनकारेलडका ॥ पाणीकाकुंभजैसाफुटारे ॥ देवो ०॥ ३
 किनकिलुगाइमाइ ॥ किनकारेभाई ॥ किनकाकुदंभआधुसुटारे ॥ देवो ०॥ ४॥ क

तहिराचन्दइनमतीसेवो॥धरमभंडारजासीलुटारो॥देशोप्यारेसंसार॥५॥इति
५३॥पदरागदादरा॥तोरेविजमेरानकोइजिनराजरो॥तोरे॥टेक॥माततुहितात
तुहिवडआता॥तासुवहुप्रेममहाराजरो॥तोरे॥तहिपरमेद्रजगदीशईशातही॥स
वदेवनकेशिरतजरो॥तोरे॥३॥जोलुमोरखसुखअवदेतनाहिमोक्को॥कहांपजाचु
किसेआजरो॥तोरे॥३॥अमुलिकसुतहिराचन्दनिततोक्कंअरजकरतनिजकाज
रो॥तोरे॥५॥इति॥५॥पदहोरीरागकाफी॥चालोजिनधामेधूममचीहोजिअ
विभावसुखेलियेहोरी॥चालो॥टेक॥सम्पकदशोनकानिरज्योमै॥अनुकंपाक्रिक
टोरी॥सीयलसंयमअविरअरगज्याज्ञानगुलालोकिडोरी॥आजिअविभावसो
खेलिएहोरी॥चालो॥५॥निश्चयरंगचिदानंदकेरा॥अनुभवकेशरधोरी॥आरि
तकीषिचकारीअरीहै॥सुमतासर्षीपरछोरी॥आज॥५॥रागविरागफागजिनगुण
कातपजपमुरजेतंवोरी॥याविधहोरी॥हिराचंदस्वेलो॥जनममरणालहोरी॥आज
॥३॥इति॥५॥पदहोरीरागकाफी॥वीतरागनकेदरवारहोरीहोयरहीहै॥वीतर
ग॥॥टेक॥दरत्रात्तवसनज्ञानउपभूषणआरितरंगअपारहोरी॥५॥कुमति

कुमार्गोकीधूलजडाई॥ सुमतासखीलिनीलारा॥ होरी॥ २॥ जिनजत्रापुहपअने
कभांतिके मनअलिकरतगुंजारा॥ होरी॥ ३॥ दयामिठाईरसचरमेवासत्यंतवो
लजदारा॥ होरी॥ ४॥ अष्टकरमंदेधनकी होरिरची॥ ध्यानअगनिकरिखार
री॥ ५॥ याविधहोरी हिराचंदखेलो॥ बडुरिनआवोसंसार॥ होरी॥ ६॥ इति॥ ६॥ प
दहोली रागकाफी॥ रंगमच्योजिनघारेचालोखेलिएहोरी॥ रंगमच्यो॥ ७॥ टेक॥ क
एगवसंतसवादशलछन॥ सुमताछवीली नाररो॥ चालो॥ ८॥ शंसज्यमकीपिकारी
वनाई॥ समकितरंगजदाररेचालोखेलियेहोरी॥ ९॥ ज्ञानगुलालविशाललियेक
रा॥ अशुचक्रमपेंडारे॥ चालो॥ १०॥ शोडश भावनकीजरमाला॥ धरमअवीरअ
पाररे॥ चालो॥ ११॥ वजतमृंदगशुभउपदेशका॥ सुधबुधतालसताररे॥ चालो॥ १२॥
कहतहिराचंदखेलोफागयौ॥ सुरगमुकतकोवाररे॥ चालो॥ १३॥ इति॥ १४॥ पदहोरी
रागकाफी॥ जाउगिगडनारसखीरी॥ अपनेपियासौंखेलंगीहोरी॥ जाउंगी॥ १५॥ टेक॥
समकितकेशरअवीरअरगज्या॥ ज्ञानगुलालजदारा॥ सखीरीनेमपियासौं॥ १६॥
ततत्वकीअरिपिचकारी॥ सीलसलिलजलधारासखीरी॥ १७॥ दशविधधर्मको

दल्युंजता गुणगलतालप्रपारसखीरी ॥३॥ अशुभक रमकीहोरी वनादेश्या
नदियोअंगार॥सखी ॥४॥ इनविधहोरीखेलतराजुल॥पायोसुरगडुवारा॥सखी ॥
कहतहिराचंदहोरीखेलो॥महिमाअगमअपार॥सखी ॥६॥ पदरागखुमावच॥मो
अरजीचितधाशेरेपुत्रुपारजतारो॥मोअरजी ॥७॥ टेक॥योभवसागरजदयभस्योहे
क्योउतरूजलजारोरे॥पुत्रु ॥१॥ इनअवसरमेउरनदाता॥एहजपगारतुम्हारे
रो॥पुत्रु ॥२॥ आखवातकीवातकहतहो॥हिरालालकुतारोरे॥पुत्रु ॥३॥ इति॥५॥
पदरागखुमावच॥ नेमजिसुरीपुरीवारोरेसरदारहमारो॥नेमजि ॥७॥ टेक॥सिवादेवि
देविनंदनसवदुषभंजन॥समुद्रविजयकोदुक्कारोरे॥सरदार ॥८॥ यदुकुलमंडन
कर्मकुखंडन॥राजुलकोभरतारोरे॥सरदार ॥९॥ अमुलिकसुतनितअरजकरत
हो॥आवागवननिवारोरे॥सरदार ॥३॥ इति॥६॥ पदरागकालिंगडो॥सावरियामे
ररुठायचालेगिरनारी॥सावरिया ॥७॥ टेक॥समुद्रविजयसुतनेमनवलजी॥सवजी
नकोहितकारी॥सावरि ॥१॥ अष्टजनमकेप्रीतममेरे॥आजचलेपरवारी॥सावरि ॥
२॥ तपकरकेपुत्रुतेममुगतमै॥भविजनकूं गयेतारी॥सावरि ॥३॥ अमुलिकसुतहि

राचंदकहतहै॥ चरणकमलवलिहारी॥ सावरि॥ ६॥ इति॥ ६॥ पद्मरागकालिंगडो॥
 केशरियाआदिजिनंदधारीछविन्यारी॥ केशरिया॥ ७॥ टेक॥ नाभिरायमरुदेविके
 दन॥ मोहलईशिवनारी॥ केश॥ १॥ सोहनिस्तरतमोहनिस्तरत॥ सुरजलजाव
 नहारी॥ केश॥ २॥ अमुलिकसुतहिराचंदकहतहै॥ अबभवमंसुवकारी॥ के
 ३॥ इति॥ ६२॥ पद्मरागख्याल॥ ५॥ चंद्रपुत्रुअतिद्युतितोरी॥ मोरीनजरियाहारी॥
 छिनमंसारीअतिभारीनिरखिनिरखिलखलखीजिनेश्वरथारी॥ चन्द्र॥ ७॥ टे
 कानुमतोषभातीतजी॥ पद्युगइंदुध्यावतनावतशिरवारवार॥ शोषरमाणि
 कलाजतहै॥ दीपकरविआगैहोचजयारी॥ चन्द्र॥ १॥ शठमंहिराचन्द्रही रवि
 तिउल्लकगावतनावतअवतारतार॥ कर्महिघेरतहेरतहो॥ वंदतकरजोरीहोव
 लिहारी॥ चन्द्र॥ २॥ इति॥ ६३॥ पद्मराग॥ हमसेउधारनाराज॥ धानेकरुणाके
 धिजाने॥ हमसे॥ ७॥ टेक॥ विधिनाकेवसिनिशिदिनभटकायो॥ चवरासीलष
 रपिरपायो॥ शरणगतजिनआयो॥ तारणयेठारणाराज॥ धानेक॥ १॥ इति
 केडपटदुखतुमभाने॥ अपनांसमकरशिवपुरठाने॥ तारणतरणकहाने॥

हारण ओहारणराज ॥ ध्यानेक ० ॥ शराना नाजोदशशतकरीक विगावै ॥ तुम
शुणको अंतन आवै ॥ हीराचंदक्या पावै ॥ तारणा होतारणा राज ॥ ध्याने ० ॥ हमसे
३ ॥ इति ॥ ६४ ॥ मेघमल्लार ॥ चौउरवदरिया वरखे ॥ चौउर ० ॥ टेक ॥ ज्यौं ज्यौं पतिपती ह
रखे ॥ बहुहरखे ॥ चौउर ० ॥ १ ॥ ठाडेगिरिसेतरुत निहचल ॥ पौनऊफारहिपरसेतन
परत्रो ॥ चौउर ० ॥ २ ॥ कालीरयणी भयंकरदुरधरवेतो नडरेडरखे ॥ कछुडरखे
चौवोर ० ॥ ३ ॥ एसेमुनिकूअमुलिकसुतनितपाउपरतनहरखे ॥ चौवोर ० ॥ ४ ॥ ६५
पदरागहूंमरी ॥ सावरिया मोहेंछांडिराजभलाकियातुनेरे ॥ सावरि ० ॥ टेक ॥ मोहें
विछंडीदीनीअरदीछ्यालीनी ॥ जादवकुलअजुवाल्याराजभलाकि ० ॥ १ ॥ से
ज्यमअवमेंजिनकाधरुंगी ॥ आतमहितकाकरुंगीकाज ॥ भला ० ॥ २ ॥ अमुलि
कसुतहिराचन्दकहतहै ॥ नेमप्रभुजिमेरिराखोलाज ॥ भला ० ॥ सावरिया ० ॥ ३ ॥
इति ॥ ६६ ॥ पदराग ॥ तारणतरणजिहजस्वामिमहाराज ॥ तारण ॥ टेक ॥ अन्यदेव
मेंवहुतहिसेयो ॥ सरियोएकनकाज ॥ स्वामीमहा ० ॥ १ ॥ अवमेंप्रभुतुमनेदविद्यान
इनभवअवरनराज ॥ स्वामी ० ॥ २ ॥ सिसनिवायमेतेकपुकारतासुनियेप्रगट

अवाज॥ स्वामि० ॥ ३॥ मुगुटमणीधेहिराचंदके॥ शरणगहे किराखोलाजास्व
मि० ॥ ४॥ इति॥ ६०॥ काफ़ी॥ पूज्पुत्रेजिनेंदनितकारिया॥ नितकारियान्वता
रिया॥ पुज्पुत्रे० ॥ टिक॥ निरखीरदधिकोनिमेतन्नरकेडारिया॥ मोहेपारउत्तरोत्र
वसमुद्रवारिया॥ पुज्० ॥ १॥ मलयगिरिचंदनसीतलवासविस्तारिया॥ संसारताप
संतापहरोनहिपारिया॥ पुज्० ॥ २॥ मोतिसमअक्षतपुंजुअखंडसुधारिया॥ अक्ष
यपदसंपतषापतकरोअवारिया॥ पुज्० ॥ ३॥ फुलरासवासअल्लिज्यापेकरेगंजा
रिया॥ दुखदामकाममोवाणनिवारोअसारिया॥ पूज्० ॥ ४॥ पकवोनअनेकप्रका
रन्नरिकैथारिया॥ इहनुखदुखममरोगहरोअतिआरिया॥ पुज्० ॥ ५॥ दिपखले
वणेवतरनमद्रसुसंवारिया॥ मममोहकमेअज्ञानहरोअंधारिया॥ पुज्० ॥ ६॥ अति
सुखसुगंधदशांगवक्लिपरजारिया॥ सवकमेकाष्टमेरेजारकरोपुनछ्यारिया
ज्० ॥ ७॥ फलआंबजांबनारिगंधगिंमनोहारिया॥ हममोदसौख्यफलदेहु
पापनिवारिया॥ पुज्० ॥ ८॥ जलंगंधआदिवसु॥ अष्टकअर्थेउत्तारिया॥ निज
पदअनर्थेद्योहिराचंदउधारिया॥ पुज्० ॥ ९॥ इति॥ ६८॥ पदरागठूमरी॥ :

वगियामेराजनवगियामेसाजनमहाविरायायेमेरेमनआयेजी॥वगियामे०॥टे
क॥कालविनाषट्फुलीहै॥फलवाफुलनकरितरुजमगायजि॥वगियामे०॥शुबै
१॥सिंघगजादिकगायवघेरा॥हंसविलीअहिनोलकहायेजि॥वगियामे०॥अथ
रखोडिएकठेसववैठै॥अचरजदेखिमैतुमकुवधायेजि॥वगियामे०॥अथन्यघ
डिदिनभागतुम्हारे॥पुन्यजदेसोप्रभुतुमपायजि॥वगियामे०॥ध॥कहतहिय
चन्दमालिवचनसुनि॥आनंदश्रेणिकउरनासमायजि॥वगियामे०॥शुइति
ईए॥पद्मरागठमरी॥वसुपूज्यनंदनवातिरथपती॥वसुपूज्य०॥टेक॥चंपापुरी
भयोजयावतीजायो॥वासुपूज्यजिनमोहनिकंदनवातीरथपतीवसुपूज्य०
१॥स्वरएवरएतनुंंचीसतरथनु॥वषेलसआयुमहिषकोलखनवा॥तीर
थ०वसु०॥दिक्षाजिनधरीतपजपकर॥वसुविधिकरमकोकियोखंडनवा॥
तीरथ०वसु०॥३॥चंपापुरीपरीसुगतिवधुवरी॥अमुलिकसुतकहैआयोवंदन
वातीरथपतीवसुपूज्य०॥इति॥७०॥पद्मरागजंगली॥गोमटस्वामिजीगोम
टस्वामिजी॥वंदूसिरनामीजी॥गोमटी०॥टेक॥अद्रुतमहिमाथारीसुजीहै॥धा

वतसुरनरसुनिशिवगामिजी॥ वंदू०॥१॥ तुमविनास्वामीवहुडुखदेरेके॥ सोतुमज
नतअंतरज्यामिजी॥ वंदू०॥२॥ मैयाधिनहोविरदतुम्हारे॥ तुमहोसाहिवभव
इखवामिजीवंदू०॥३॥ अमुलिकनंदननिपटअयानी॥ ल्योहिराचंदकूं॥ शि
रुमिजी॥ वंदू०॥४॥ इति॥ ७१॥ पदराग॥ जिनतोमेंअवशरणगतआयो॥ नव
दधिपारउतारिये॥ जिनतोमें०॥५॥ टेक॥ कालसुनटमेरेलारलगयोहै॥ याकोन
रवारिये॥ जिनतोमें०॥१॥ हयगयरथअरु राजसंपदा॥ दमकचमकज्यंपवखा
ये॥ तुमप्रभुदीनदयालकृपानिधिमेरिदयाउरधारिये॥ जिन०॥२॥ अष्टकर
मोहेवहुतसंतापेइनकोमूलउखारिये॥ जिनतो०॥३॥ अमुलिकनंदहिराच
कहै॥ आवागवननिवारिये०॥ जिन०॥४॥ इति॥ ७३॥ पदराग॥ सुएएकधरमवि
नारेसुगपान॥ अधिरजगतसवजानिए॥ सुएएक०॥५॥ टेक॥ तनधनजोवनइ
द्विविषयसुखासुपनावतकरिमानिए॥ सुएए०॥६॥ अनुजतनुजतियमात
ताथित॥ विजलीसमएपिछानिये॥ सुएए०॥७॥ अनरपतिसुरपतिखगपतिह
हर॥ इंद्रुधनुषज्यंपमापिये॥ सुएएक०॥८॥ नाकछुधिरताइनआदिकसव॥ ध्या

यासमकरिठानिये। सुए० ॥ ५ ॥ अमुलिकनंदहिराचंद्रकहे ॥ रत्नत्रयउरआनिये
सुएएक० ॥ ६ ॥ इति ॥ ७ ॥ पदरागविहाग ॥ एतोफलपापधरमकैनाइ ॥ पापधमे
कैनाइफलपाप० ॥ टेक ॥ एकनकेघरसंगलगावै एकनकेघररोवै ॥ एकनको
थलरहनपावै ॥ एकमहलमेंसोवैफल० ॥ १ ॥ कोइएककेघरमालखजाना ॥
कोइएककेनहिदाना ॥ कोइएकपरघरकामकराना ॥ कोइएकअपकदाना ॥
फल० ॥ २ ॥ एकसदासुखभुंजतआरी ॥ एकनकौनहिनारी ॥ एकफिरेजगमांहि
निकारी ॥ एकनकौधनआरी ॥ फलपाप० ॥ ३ ॥ एकनकारुपसुभगनिरोगी ॥ एकन
कातनरोगी ॥ एकसदानरसवसुवियोगी ॥ एकसदासुसंयोगी ॥ फल० ॥ ४ ॥ पापपु
न्यफलएहकहावै ॥ कविपरतखवतावै ॥ अमुलिकसुतहिराचंद्रहियावै ॥ अनुभ
वमनमेंलावै ॥ फल० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥ पदराग ॥ हाजिमोहे महापुण्यउपजानापुण्ये
उपजानापुण्येउपजाना ॥ हाजिमोहे ॥ टेक ॥ अष्टापदगिरनारशिखरजीचं
पापावापुरकना ॥ हाजिमोहे ॥ १ ॥ मांगितुंगीतारंगसेतुजे ॥ जानाकरएकंसथा
ना ॥ हाजिमोहे ॥ २ ॥ श्रीजिनमंदिररचिकैतामें ॥ जैनविवपधराना ॥ हाजिमोहे

३॥ पुजाप्रतिष्ठाकरुसंघलाई॥ मुनिक्कंदानघठाना॥ हाजीमोहे०॥ १॥ अधर्मक
नुदानअभयधौपंचपरमपदधाना॥ हाजीमोहे०॥ ५॥ परजपगारमार्गोप
वनारथजादिचलाना॥ हाजीमोहे०॥ ६॥ योभावभयोसोप्रभुपुरवो॥
लिकनंदनगाना॥ हाजीमोहे०॥ ७॥ इति॥ ७६॥ पदरागसोरठा॥ मनमरकट
अचलकनाई॥ मनमर०॥ ८॥ टिक॥ छिनमेप्रविनताछिनमेमलिनता॥ जल
पुलटनटनाई॥ मन०॥ १॥ अरहटघटज्यौध्वजपटभौरा॥ चक्रसमानअमाई
मन०॥ २॥ मनसांचंचलउरनदूजा॥ सहसकोत्राचलजाई॥ मन०॥ ३॥ कपटजपटि
है॥ तनसुलपटिरहै॥ जायकहासुकहाई॥ मन०॥ ४॥ विषयभोगभेंलीनरहै
तेपजपमंहिवुराई॥ मन०॥ ५॥ तंदुलमिनसोमनसाअत्रै॥ पावननरककै
ई॥ मन०॥ ६॥ इति॥ ७७॥ पदरागसोरठा॥ मरुजीमैनिरधारमरुजीमैनिरधार
मंदिरपेक्यौनचालो॥ मारुजी०॥ टेक॥ कवकिभेंठाडीभईअरजकरुछुआप
हादयाकैभंडारमंदिरिये०॥ नेमजि०॥ १॥ तुमविनास्वामीकौनहमारा
वतुमअरतारमंदरिये०॥ मारुजी०॥ २॥ धनराजुलमतीसतिहिरचन्दुकहे॥

दिष्वाल्लिनीनेमप्रभुलारमंदिरिये ०॥३॥इति ॥७८॥ त्रैपनक्रियापदलावणी ॥
श्रावणक्रियेत्रैपणकहिारे ॥ श्रावकको आचारकह्यो एहनितिप्रतिआचरिये
श्रवणक्रिये ० ॥ टेक ॥ प्रथममुलगुणवसुविधिमानिरे ॥ पिपरवरजंवरिकडुंब
रिफलजान्निमद्यमकाररतिङ्गीरे ॥ इन्वसुको अतिचारसहितत्यागक्रिजे अग्र
खानी ॥ चाल ॥ त्रसजिवकौघातनक्रिजे ॥ परपिडाकुवचनवदिजे ॥ परधनपरति
यनगहीजे ॥ परीग्रहदशाधासिमकरियेरे ॥ श्रावक ० ॥ १॥ नित्यदशादिशा अवधी
करणारे ॥ देशप्रमाणनग्रवनसरितादिकयमव्रतधरण ॥ अनर्थेदंडना आचर
णारे ॥ सामाइकयेकोततिहकालयथाआदरण ॥ चाल ॥ प्रीषधविधिचौपवेधरे
नौगोपभोगनेमवरो ॥ दानसुपात्रकुचारिकरो ॥ एवंछादशाव्रतआदरियेरे ॥ श्रा
वक ० ॥ २ ॥ तपाअनशानअवमोदरियेरे ॥ खानेकीवलुसंखारसपरित्यागहिकरि
ये ॥ विविक्ताशाय्यासनरित्यागहिकरिये ॥ विविक्ताशाय्यासनरहियेरे ॥ कायलेत्रा
मिलीतपछहएहविधअभ्यंतरकहिऐचाल ॥ प्रायश्चितअरुविनये ॥ वैय्याहृत्य
सुखाध्याये ॥ कायोत्सगेरुधानलिये ॥ बाह्यतपएहविधिधरियेरे ॥ श्रावक ० ॥ ३ ॥ जंब

पण त्रिमकारनभुंजोरो॥ द्युतपलसुरावैश्याऽहेहीचोरिपरस्त्रीतजो॥ सामाद्रकपर्वे
उपासभजोरो॥ सचित्तत्यागिदिनकुवल्लवृतथरिनिशिभोजनवरजोचाल॥
स्वस्त्रिपरस्त्रिसदा॥ सर्वोरंभकरोनकदा॥ राखीवस्तरएकजदा॥ ग्रंथयाविनसव
रिहरियेरो॥ श्रावक ॥६॥ अन्मृतकिनकूंनादेनारो॥ श्रावक ॥६॥ अन्मृतकि
कूंनादेनारो॥ भुक्ति समयजेबुलायवाघरज्याभोजनलेना॥ कमंडलकरेपिपि
छिधरनारो॥ एकवसनभुक्तिपात्रअसननिमितपणघररखना॥ चाल॥ एहु
ऐलकऐलकअवदुसरो॥ पीछिकमंडलकोपिधरो॥ करपात्रउंडंडाहारकरो॥ ए
कादशप्रतिमानुच्चरियेरो॥ श्रावकको॥६॥ धरोएकसाम्यभावचोखोरो॥ जलगाल
अन्नअनयउषधशास्त्रदानपोखो॥ दर्शनज्ञानचरणचितराखोरो॥ अन्नसामित
शिशुक्तिजोएत्रिपणकियालेखोचाल॥ मुलगुणवसुप्रतिमागपारा॥ चौदानवत
हितपवारा॥ त्रिरतनफिरइकइकसारा॥ हिराचन्दकहेजातैतरिपेरे॥ श्रावकको
॥६॥ इति॥७॥ अथअक्षोहणीदलसंख्याकथन॥ पदलावणी॥ कटकसवक्षोणि
कासुनिपेरे॥ आगसमैनवनेदकहेसोपृथकपृथकभणिय॥ कटक॥ टेक॥ एकर

एक लिजेहस्तिरो॥१॥पंचसुभटा॥३॥तिनतुरंग॥३॥एहतोप्रथमकहीयती॥तीनर
था॥३॥बुहरितीनंदतीरे॥३॥सुभटा॥१५॥नवतुरंग॥१५॥एहसेनादुजिगिनतीचा
लानोमतंग॥१५॥नौरथा॥१५॥जाणोपेंतालिसप्यादे॥६५॥मानो॥सताइसवाजि॥२७
वषाणो॥वहिहहसेनामुखततियेरो॥आगममे०॥१॥सताइससताइसरथा॥२७
करी॥२७॥भटाएकसोपेतिस॥१३५॥हयइक्यासि॥८१॥गुत्मकहीवहुरी॥इक्या
सिइक्यासिरथा८१॥गजाठ१॥फिरीरो॥हयदोयसेतियालिस॥२४३॥पचमवाहिनिक
हिसारी॥चाल॥द्वैशाततियालिस॥२४३॥गयवरा॥रथतयो॥२४३॥भटवारसिपंदरा॥
१२१५॥हयसातसिजणतिस॥७२१॥पुवरा॥एतोषष्टमपुतनाकहियेरो॥आगममे
०॥१॥सातसैगुणतिसहस्ती॥७२१॥लियेरो॥ब्रतिसैपेंतालिसभटा॥३६४५॥इकवि
ससिसत्यासिहयो॥२१८७॥सातसिगुणतिसरथा॥७२१॥चमुकहिऐरो॥एकविससैस
त्यासिकरी॥२१८७॥अरइतनेंरथा॥२१८७॥लहिए॥चाल॥भटदशासहसनोसिपेंस
ठिकी॥१०१६५॥हयपेंसठिसैइकसठकी॥६५६१॥एहवसुमीअनिकिनिकहिकी
त्रिसुलअनिकिनिवसुभेदभयेरो॥आगम०॥३॥इहांलौवहैत्रिगुणत्रिगुणसोदशा

अनि किनि कि ॥ एक दत्तो ति कै सुणौ कहु सव सै ॥ एक इ स ह स अर अ ठ सै रो ॥ स तरि
परि र थ इ त नै ॥ १४ ७ ॥ ति त नै ग ज ॥ २१ ८ ७ ॥ विल से चाल ॥ न ट ल ख न व ह जार उ
सै ॥ १० ए ३५ ० ॥ ह य पै स ठि स ह स छ ह सि द त्रै ॥ ६५ ६१ ० ॥ इ क अ द्दो णि अ इ ए सै ॥ हि रा
द मं द क हे वि न ये रे ॥ आ ग म ० ॥ ४ ॥ इ ति सें पूर्णे ॥ ८ ० ॥

लिखी मन्दी र जी बडा ते रा पन्थी प्रा न ^{नी सि} सै स वा ई ज य पू र
श्रा व ण श्रु क्ता १५ मंग ल व र स . १६ ८ ६ बी क्र म
ह स्ता अ क्ष र रा जू ल ल भा व सा



